सम्पादकीय

विश्व गुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का चतुर्थ पुष्प आपके कर कमलों में देते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस मासिक पत्रिका के तीन अंक पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं। भारतीय धर्म संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। नियमित विद्वानों द्वारा भेजे जा रहे शोध लेख हमारा मनोबल बढा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

प्रकाशन की इसी परम्परा में कुछ नये आयामों को और जोड दिया गया है, जिसमें संस्था, विद्यावाचस्पती समीक्षाचक्रवर्ति पं. मधुसूदन ओझा के अप्रकाशित साहित्य को सानुवाद प्रकाशित करने का कार्य भी कर रहा है।

इस समय सम्पूर्ण विश्व वैश्विक महामारी से जूझ रहा है, संकट की इस घडी में शोध संस्थान अपने शोध लेखों के माध्यम से नवीन अनुसंधानात्मक जानकारी आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। इस अंक में अन्य लेखों के साथ कोरोना महामारी पर आधारित लेखों का समावेश किया गया है।

धर्म क्या है? इस प्रश्न का अनेक रूपों में उत्तर देते हुए भारतीय विद्या मनीषी पं. अनन्त शर्मा जी ने वेद धर्म, ब्रह्माण्ड धर्म तत्पश्चात मानव धर्म किन-किन रूपों में हमें पालन करना है। इसकाा विस्तृत वर्णन किया है। पं. नारायण शर्मा काङ्कर ने भगवान शिव की आराधना से इस महामारी से स्तुत्य किया है। इसकी सुगमता के लिए, इन्दु जी ने हिन्दी रूपान्तरण किया व आङ्गरूपान्तरण महामण्डलेश्वर ज्ञानेश्वरपुरी जी ने किया।

योग क्रियाओं के माध्यम से बचाव व उपाया योगनी पुष्पलता जी ने अपने आलेख में प्रस्तुत किये। श्री धीरेन्द्र स्वामी जी ने तनाव के पक्ष को प्रस्तुत किया वहीं डॉ. देवेन्द्र जी ने प्रभावी शिक्षण की उपयोगिता सिद्ध की। पं. नवीन जोशी ने प्राचीन ग्रामीण परम्परा का कविता में चित्रण किया। सांङ्गोपाङ्ग यह अंक आप सुधीजनों को सुखद अनुभूति देगा, इसी आशा के साथ–

–सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

पूर्व प्राचार्य, श्री दादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर